17 मार्च, 2010 को 2000 बजे दीवान-ए-आम, ताज महल होटल, मानसिंह रोड, नई दिल्ली में एस.ए.जी.ई. (सेज) प्रकाशनों के 45वें वर्षगांठ समारोह के अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति माननीय श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

मैं एक किताबी कीड़ा और पुस्तक प्रेमी हूं तथा विश्व की भाषाओं में इस प्रकार के किसी भी रूप में वर्णन किए जाने के योग्य हूँ। इसलिए, पुस्तकों के प्रकाशन समारोह के लिए सभा में उपस्थित होने के लिए अपने आप को राजी करने में मुझे कोई ज्यादा कठिनाई नहीं हुई।

मैं मुद्रित शब्द के पक्ष में पूर्वाग्रही होने के मामले में काफी पुराने ख्यालों वाला भी हूं, हालांकि मैं इस बात को जानते हुए भी कि जिस तरह मिट्टी की तखती की जगह भोजपत्र, लकड़ी का ठप्पा मुद्रण, लाख पट्टी और चर्मपत्र आ गए और इनकी जगह कागज ने ले ली, उसी प्रकार से मानव रचनात्मकता हमें कागज से परे पुस्तकों के नवीन प्रारूप की ओर ले जाएगी--- जो उपयोगी और संग्रहणीय तो होंगे लेकिन उनमें अद्वितीय व्यक्तिगत स्पर्श और स्वत्वात्मकता का अभाव होगा जोकि किसी पुस्तक का मालिक मुद्रित पुस्तक से प्राप्त करता है।

हम विकास की घड़ी को रोक नहीं सकते हैं; इसी तर्क के अनुसार यह घड़ी मुद्रित पुस्तक के समारोह को मनाने आज हमें रोक नहीं सकती है।

हाल के दशकों में पुस्तकों का प्रकाशन प्रचुर मात्रा में हुआ है। आकांक्षाओं के विपरीत आधुनिक जीवन की गति ने पढ़ने की भूख को कम नहीं किया है; इस संबंध में लेखकों और प्रकाशकों ने पर्याप्त मात्रा में इसके अनुरूप अपना काम किया है। इनमें से एस.ए.जी.ई. (सेज) प्रकाशन का नाम इसलिए भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि यह सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के मूल्य और महत्व को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध रहा है।

यहां और अन्यत्र उपस्थित श्रोता इस उचित प्रश्न को पूछने के लिए प्रेरित हो सकते हैं कि ऐसे समय में सामाजिक विज्ञानों पर इतना जोर क्यों दिया जाए जब प्रौद्योगिकी अपने सभी प्रकार के विविध रूपों में हमारे आगे-पीछे घूम रही है?

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उत्तर सरल है। प्रौद्योगिकी ने विश्व को सार्वभौमिक बना दिया है और असमान तत्वों को वैश्विक गांव में परिवर्तित कर दिया है। दूरियां खत्म हो गई हैं, और इसी तरह एकाकीपन और अलगाव भी समाप्त हो गए हैं। विविधताएं अक्षुण्ण रहती हैं, जो प्राय: सामीप्य द्वारा बढ़ जाती है। 'मैं' और 'अन्य' का संगम होने लगता है तथा अक्सर एक दूसरे में घुलमिल जाते हैं।

इसका एक परिणाम सामाजिक संपर्क की प्रबलता है; दूसरा इसकी जटिलता है। इससे 'अन्य' को समझना अनिवार्य हो जाता है। समझने की इच्छा मामले का एक पहलू है; तथापि, 'समझना' एक जटिल प्रक्रिया है और इसके लिए जैसाकि बरट्रेंड रसेल ने कहा था "हमारे उच्छृंखल आवेग को शांत करना आवश्यक है।"

सामाजिक विज्ञान ही हमें इस प्रयत्न को समझने के लिए साधन प्रदान करते हैं। ये साधन प्रक्रिया की सैद्धांतिक और व्यवहारिक रूप से सहायता करते हैं। अनुभव यह दर्शाता है कि व्यवहार और प्रतिक्रिया के प्रतिमान समय और दूरी, वास्तविकता और व्यक्तिपरता से बंधे होते हैं। इन्हें विवेकपूर्ण तरीके से पहचानने और संक्षेप में व्यक्त करने की आवश्यकता होती है।

सामाजिक विज्ञान के दायरे में वह प्रत्येक चीज आती है जो समाज के कार्यकरण और इसके भीतर की शक्तियों एवं कारकों के पारस्परिक संपर्क से संबंधित है। इसमें आवश्यकता अपने आप ही समाविष्ट होती है। महत्वपूर्ण विवेचन और सुविवेचित असहमति इसके आवश्यक तत्व हैं। इस प्रकार, सामाजिक विज्ञान खुले समाजों में फलता-फूलता है और बंद समाजों में घुटन महसूस करता है।

मैं पक्के तौर पर यह मानता हूं कि एक स्वस्थ समाज के लिए सामाजिक विज्ञान का पनपना जरूरी है। हमारे अपने समाज की विस्मयकारी जटिलता के संबंध में उनकी प्रासंगिकता पर टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। इस कारण से मैं सेज पब्लिकेशन्स को सामाजिक विज्ञान अनुसंधान और प्रकाशनों के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए बधाई देना चाहूंगा।

मैं श्री विवेक का आभारी हूँ कि उन्होंने आज शाम मुझे आमंत्रित किया।

****